# स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड

कला संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिन्दी) उपाधि

हेतू प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

# मधु कांकरिया के उपन्यासों का समस्यागत अध्ययन


शोधकर्ता

**चव्हाण अनिल मोहनराव**

शोधनिर्देशक

**डॉ.एमेकर एन.जी.**

सहाय्यक प्राध्यापक एवं विभागप्रमुख

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर

जि.लातूर 413517


**फरवरी 2015**

# मधु कांकरिया के उपन्यासों का समस्यागत अध्ययन

**भूमिका :**

हिन्दी का कथा साहित्य दिन-ब-दिन समृद्ध होता जा रहा है। वर्तमान समय में साहित्य भिन्न-भिन्न विषयगत धाराओं में विभाजित हुआ है। आज उपन्यास साहित्य बड़े पयमाने पर सृजन किया जा रहा है। वर्तमान समय में दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श के साथ-साथ नारी विमर्श की धाराएँ समृद्ध होती जा रही है। नारी विमर्श का आरंभ आधुनिक काल में ही माना जाता है। समकालीन समय में अनेक महिला लेखिकाओं ने नारी विषयक वेदना, दु:ख, उत्पीड़न, कुण्ठा को लेकर साहित्य लेखन किया है। उन लेखिकाओं में मन्नु भंडारी, प्रभा खेतान, अलका सरावगी, गीतांजली श्री, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पूष्पा, मृदूला गर्ग आदि के साथ-साथ ही मधु कांकरिया ने भी हिन्दी कथा साहित्य में अपनी विशेष छाप छोड़ी है। समकालीन महिला कथाकारों में मधु कांकरिया का विशेष महत्व रहा है

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में नारी का दृष्टिकोण एवं उसके प्रति दृष्टिकोण दोनों में परिवर्तन आया है। हिन्दी कथा साहित्य की निरंतर विकासशील परंपरा में अनेक मोडो पर नारी पात्रों ने विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह किया। ऐतिहासिक क्रम में नारी कुंठाओं, कमजोरियों, प्रताड़नाओं, अंधविश्वासों, रुढ़ियों, परम्पराओं और अत्याचारों के बीच से उभरकर आज वह परिवर्तनशील हो गई है। स्वातंत्र्योत्तर नारी के संदर्भ और सम्बन्ध बदल चुके हैं। विशेषत: सन 1990 के बाद ये परिस्थितियाँ बदल चुकी है। इसी यथार्थ को दिखाने का काम आज की लेखिकाएँ कर रही है। विशेषत: मधु कांकरिया जी का साहित्य इस विषय में लिखा गया है।

समकालीन महिला लेखिकाओं में मधु कांकरिया एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है। प्रतिभा संपन्न मधु कांकरिया समकालीन महिला लेखन में एक ऐसा नाम है जिसने हिन्दी साहित्य में अपनी खास पहचान निर्माण की है। अपने उपन्यास साहित्य में उन्होंने समाज की विभिन्न समस्याओं को रेखांकित किया है। समाज की ज्वलंत समस्याओं का मार्मिकता से चित्रण करने का कार्य किया है।

मैं जब दयानंद कला महाविद्यालय के ग्रंथालय में किताब ढुँढ रहा था तब अचानक मेरी

नजर मधु कांकरिया के साहित्य पर पड़ी। उनमें से कुछ कहानीयाँ और कुछ साहित्य पढ़कर मेरी उनके साहित्य के प्रति रुचि बढ़ती गई। उनके उपन्यासों में वर्तमान समय का ग्रामीण एवं शहरी समाज उभरकर आया है। जब शोधकार्य का मौका मिल रहा था तब मैंने इसी विषय का चयन किया। मेरे शोध कार्य का विषय बना "मधु काकंरिया के उपन्यासों का समस्यागत अध्ययन"। मेरे शोध कार्य का प्रारुप निम्नलिखित है।

**प्रथम अध्याय**

**मधु कांकरिया का व्यक्तित्व और कृतित्व**

**द्वितीय अध्याय**

**स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में मधु कांकरिया का स्थान**

**तृतीय अध्याय**

**मधु कांकरिया के उपन्यासों का कथ्यगत विवेचन**

**चतुर्थ अध्याय**

**मधु कांकरिया के उपन्यासों का समस्यागत अध्ययन**

**पंचम अध्याय**

**मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य का शैल्पिक अध्ययन**

**षष्टम अध्याय**

**मूल्यांकन और निष्कर्ष**

परिशिष्ट - संदर्भ ग्रंथ सूची

**प्रथम अध्याय -** 'मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' से संबंधित होगा। इसमें मधु कांकरिया का जन्म, बचपन, पारिवारिक वातावरण, विवाह एवं दाम्पत्य जीवन, साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं प्रभाव आदि से संबंधित होगा। मधु कांकरिया के कृतित्व का विधागत सामान्य परिचय दिया जाएगा।

**द्‌वितीय अध्याय -** 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में मधु कांकरिया का स्थान' से संबंधित होगा। स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यास साहित्य का परिचय देकर मधु कांकरिया का स्थान निर्धारित किया जाएगा। इसमें मधु कांकरिया की साहित्यिक विशेषताओं को रेखांकित

किया जाएगा।

**तृतीय अध्याय -** 'मधु कांकरिया के उपन्यासों का कथ्यगत विवेचन' से संबंधित होगा। मधु कांकरिया के उपन्यासों का प्रकाशानुक्रम से कथ्यगत विवेचन प्रस्तुत किया जाएगा। मधु कांकरिया आधुनिक रचनाकार है। उनके उपन्यास आधुनिक विषय से जुड़े हुए हैं। नारी, नक्सलवाद, समाज, परिवार, वेश्या जीवन आदि को अपने उपन्यासों का कथ्य बनाया है। इसी को इस अध्याय में प्रस्तुत किया जाएगा।

**चतुर्थ अध्याय -** 'मधु कांकरिया के उपन्यासों का समस्यागत अध्ययन' से संबंधित होगा। इसमें मधु कांकरिया के उपन्यासों में आयी हुई समस्याओं का अध्ययन किया जाएगा। मधु कांकरिया वर्तमान समय की लेखिका होने के नाते उनके उपन्यासों में वर्तमान समय की समस्याओं का चित्रण हुआ है। उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त समस्याएँ हैं - सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, नक्सली समस्याएँ, साध्वी समस्या एवं वेश्या समस्या तथा अन्य समस्याओं का अध्ययन किया जाएगा।

**पंचम अध्याय -** 'मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य का शैल्पिक अध्ययन' से संबंधित होगा। इस अध्याय में मधु कांकरिया के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन किया जाएगा। जिसमें भाषागत विशेषताएँ एवं शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन किया जाएगा।

**षष्टम अध्याय** मूल्यांकन और निष्कर्ष से संबंधित होगा । इसमें शोध-कार्य का मूल्यांकन कर वस्तूनिष्ठ निष्कर्ष प्रस्तुत किये जायेंगे ।

अंततः परिशिष्ठ के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथ सूची प्रस्तुत की जाएगी।

**शोधकर्ता**

**चव्हाण अनिल मोहनराव**

**शोध निर्देशक**

**डॉ.एमेकर एन.जी.**

सहाय्यक प्राध्यापक एवं विभागप्रमुख

श्री हावगीस्वामी महाविद्यालय,उदगीर

जि.लातूर 413517